1960C An Exhibition of Jain Art

Jain Kala Pradarshani (In Anekant, 1960)

जैनकला-प्रदर्शनी और सेमिनार

गत नवम्बर मासमें भारतकी राजधानी दिल्ली में अनेक सांस्कृतिक समारोह हुए, जिनमें यूनेस्को सम्मेलन, बुद्धजयन्ती और बौद्ध कला-प्रदर्शनी प्रमुख थे। इसी अवसर पर जैन समाजकी ओरसे जैन कला-प्रदर्शनी और सेमिनारका भी आयोजन किया गया। स्थानीय सप्रू हाउसके प्राङ्गणमें जैन-कला प्रदर्शनीका उद्घाटन भारत सरकारके खाद्यमंत्री श्री अजितप्रसादजी जनके द्वारा २५ नवम्बरको दिनके ११ बजे किया गया। इस अवसर पर अनेक मंत्रियों और संसद्-सदस्योंके अतिरिक्त स्थानीय और बाहरसे आये हुये हजारों व्यक्ति उपस्थित थे। उद्घाटनसे पूर्व स्वागत-समारोहके अवसर पर श्री० साहू शान्तिप्रसादजी, ला० राजेन्द्रकुमारजी, श्री० अजितप्रसादजी जैन और आर्किलोजिकल डिपार्टमेन्टके डायरेक्टर जनरल डॉ० श्रीरामचन्द्रनके भाषण हुए। डॉ० रामचन्द्रनने जैनमूर्तिकलाकी प्राचीनता और महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जैन तीर्थंकरोंकी दिगम्बर मूर्तियाँ अहिंसा और शान्तिकी प्रतीक हैं और उनके द्वारा हमें आत्मिक-शान्ति प्राप्त करनेका एक मूक सन्देश प्राप्त होता है। आपने अपने भाषणमें इंडस-घाटी, हड़प्पा आदि प्राचीन ऐतिहासिक स्थानोंसे उपलब्ध जैन-मूर्तियोंकी विशेषताका बहुत ही सुन्दर परिचय दिया।

प्रदर्शनीकी सजावट बहुत ही आकर्षक और मनोरम थी। प्रचीनता और ऐतिहासिकताके क्रमसे सारी वस्तुएं यथास्थान रखी गई थी। हड़प्पा, उदयगिरि-खंडगिरि, मथुरा, श्रावणबेलगुल, खजुराहो, आबू, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानोंके अनेक ऐतिहासिक विशाल चित्र, देवगढ़ और पार्श्वनाथ किला (बिजनौर) की भव्य मूर्त्तियाँ, चौदहवीं शताब्दीकी बनी लकड़ीकी कलापूर्ण वेदियाँ, सित्तन्नवासल (दक्षिण भारत) के सुरम्य रंगीन चित्र भगवान महावीरके पाँचों कल्याणकोंके प्रदर्शक सुरम्य चित्र, अठारह भाषाओंमें उत्कीर्ण देवगढ़का पाषाण-शिलालेख, अजमेरकी स्वर्णिम अष्टमंगल-द्रव्य और सोलह स्वप्नोंसे मंडित सुन्दर बन्दनवार, तीन लोक और बाहुबलीके विशाल चित्र, अढ़ाई-द्वीपका मंडल, रथ, पालकी और वेदी से प्रदर्शनी वस्तुतः प्रदर्शनीय बनी हुई थी।

प्रदर्शनीके मध्य भागमें मैसूर, अजमेर, जयपुर, बीकानेर आदि अनेक शास्त्र-भण्डारोंसे आये हुये प्राचीन एवं रंगीन सचित्र शास्त्र शोकेशोंमें सजाकर रखे गये थे। हस्तलिखित शास्त्रोंमें १२वीं शताब्दीसे लेकर १६वीं शताब्दी तकके अनेक दर्शनीय ग्रन्थ थे। इनमें अनेक ग्रन्थ स्वर्ण और रजतमयी स्याहीसे लिखे हुए थे। सचित्र ग्रन्थोंमें ताड़पत्रीय कल्पसूत्र और कालिकाचार्य-कथानकके अतिरिक्त कागज पर लिखे गये ग्रन्थ भी पर्याप्त संख्यामें विद्यमान थे, जिनमें जयपुरका सचित्र भक्तामरस्तोत्र, आदिपुराण, यशोधरचरित्र, त्रिलोकसार और वीरसेवामन्दिरकी रविव्रत-कथा उल्लेखनीय हैं। इन ग्रन्थोंके चित्रोंने दर्शकोंको विशेषरूपसे अपनी ओर आकृष्ट किया। ग्रन्थराज धवल-सिद्धान्तके हजार वर्ष प्राचीन ताड़-पत्रोंके वीरसेवामन्दिर-द्वारा लिये गये फोटो भी प्रदर्शनीकी श्रीवृद्धि कर रहे थे। कपड़ों पर बने हुए अनेक चित्र भी मनमोहक थे। प्राचीन कालमें जैन साधु जिन उपकरणोंके द्वारा ग्रन्थ लिखते थे-वे प्राचीन उपकरण भी अनेक भण्डारोंसे लाकर प्रदर्शनीमें यथास्थान रखे हुये थे।

यह प्रदर्शनी २५ नवम्बरसे २ दिसम्बर तक दर्शकोंके लिए खुली रही और देश-विदेशोंके हजारों व्यक्तियोंने उसमें जाकर भारतीय जैनकलाका अवलोकन उसकी मुक्त-कण्ठसे प्रशंसा की।

इसी अवसर पर ३० नवम्बरसे २ दिसम्बर तक एक सेमिनार (गोष्ठी) का भी आयोजन किया गया। जिसके लिये स्थानीय विद्वानोंके अतिरिक्त बाहरसे आये हुए व्यक्तियोंमें डॉ० कालीदास नाग, डॉ० हरिमोहन भट्टाचार्य, बा० छोटेलालजी जैन कलकत्ता, डॉ० हीरालालजी वैशाली, पं० जगन्मोहन लालजी कटनी, पं० महेन्द्रकुमारजी न्यायाचार्य बनारस, पं० सुमेरुचन्द्रजी दिवाकर सिवनी, श्री० अगरचन्द्रजी नाहटा बीकानेर, श्री० कासलीवाल एम. ए. जयपुर, पं० पद्मनाभजी मैसूर, पं० राजकुमारजी साहित्याचार्य, बड़ौत आदिके

नाम उल्लेखनीय हैं।

सेमिनारका उद्घाटन ३० नवम्बरको ११ बजे आचार्य काल्लेलकरने किया। आपने अपने भाषणमें भ० महावीर और भ० बुद्धकी चर्चा करते हुये बतलाया कि उनके द्वारा उपदिष्ट मार्गसे ही आजके तनावपूर्ण अशान्त वातावरण में शान्ति स्थापित की जा सकती है। जैनधर्म आत्मोन्नतिकी प्रेरणा देता है और अहिंसाके द्वारा मानव ही नहीं, प्राणिमात्रके कल्याणकी कामना करता है। आपने जैन सिद्धान्तों की विशदरूपसे चर्चा करते हुए अनेकान्त आदि सिद्धान्तोंके व्यवहारमें लाने पर जोर दिया। इसी समय आ० देशभूषणजी और आ० तुलसीजीने भी अपने भाषणमें बतलाया कि आजके युगमें अनेकान्त दृष्टि ही विश्वको उबारनेमें माध्यम बन सकती है। अहिंसा और अपरिग्रहकी आराधना ही विश्व-मैत्रीका सच्चा रास्ता है। अपनी दुर्बलताओंको जीते बिना न हम स्वयं शान्ति प्राप्त कर सकते हैं और न विश्वमें ही उसे प्रस्थापित कर सकते हैं।

डा० कालीदास नागने अपने महत्त्वपूर्ण ओजस्वी भाषणमें कहा—भारतके प्रति विदेशोंका जो परस्पर-संभाषण और मैत्रीका सम्पर्क बढ़ रहा है, वह इस बातका प्रतीक है कि संसार भारतसे मिल कर वह शान्तिपूर्ण वातावरण बनाना चाहता है, जिसका प्रचार बहुत पूर्व भ० महावीरने किया था। डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्रीने जैनधर्मकी संस्कृति पर महत्त्वपूर्ण भाषण दिया। अध्यक्ष पदसे भाषण देते हुये साहू शान्तिप्रसादजी जैनने श्रमण संस्कृतिके समस्त पुजारियोंसे अनुरोध किया कि वे विश्व-बन्धुत्वकी भावना और विश्वशान्तिके प्रचारके लिये तैयार हो जावें।

१ दिसम्बर का प्रातः ६॥ सेमिनार की दूसरी बैठक डा० हीरालाल जी की अध्यक्षता में हुई। उसमें डा० हरिमोहन भट्टाचार्य, पं० सुमेरचन्द्र जी दिवाकर, पं० महेन्द्र कुमार जी न्यायाचार्य, बा० कामताप्रसाद जी, श्री अगरचन्द्र जो नाहटा, डा० इन्द्रचन्द्र जो, बा० माईदयालजी और डा० कालीदास नागके अहिंसा और अपरिग्रह पर महत्त्वपूर्ण भाषण हुए। अन्त में डा० हीरालाल जी ने अपने भाषण में कहा कि विश्व-संस्कृति में जैन संस्कृति का स्थान महत्वपूर्ण है। अहिंसा विश्व में बढ़ती जा रही है और इसी से विश्व की समस्याओं का समाधान हो सकता है। आपने यह भी कहा कि प्राचीन काल में श्रमण संघ इस प्रकार के तनाव पूर्ण वातावरण को रोकने में सफल हुए थे।

आज सायंकाल ३ बजे सेमिनार की तीसरी बैठक डा० हरिमोहन भट्टाचार्य के सभापतित्व में हुई, जिसमें अनेकान्त और स्याद्वाद पर अनेक विद्वानों के महत्वपूर्ण भाषण हुए।

२ दिसम्बर के प्रातः ६॥ बजे से चौथी बैठक डा० कालीदासनागको की अध्यक्षता में प्रारंभ हुई। आज का विषय 'विश्व शान्ति के उपाय' था। श्री रवीन्द्र कुमार जैनने बताया कि हमें जीवनके प्रत्येक पग में अहिंसा और अपरिग्रहको लेकर चलना होगा, तभी विश्वमें शान्ति का वातावरण सम्भव हो सकेगा। ललितपुर के वर्णी कालेज के प्रिन्सिपल बी० पी० खत्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज विश्व शान्ति के लिए जो पंचशील की योजना बनाई गई है, उसमें जैन धर्मके सभी मूल सिद्धान्त सन्निहित हैं। पं० जगन्मोहन लाल जी शास्त्री ने कहा कि आज विश्व में अशान्ति का प्रधान कारण मानव ही है। यदि मनुष्य ने अपने आपको ठीक कर लिया, तो विश्व में शान्ति स्वयमेव स्थापित हो जायगी। पं० राजकुमार जी साहित्याचार्य ने बताया कि हमें आवश्यकता है अपने चरित्र-निर्माण की। यदि सद्-भाव के सूत्र से बंध कर अपने चरित्र को विकसित कर लिया, तो हम शान्ति का एक आदर्श उपस्थित कर सकेंगे। श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन ने मुख्यतया तीन समस्यायें बताईं—१ साम्राज्यवाद की लिप्सा, २ ईर्ष्या द्वेष घृणा और ३ आर्थिक विषमता। इन तीनों बुराइयों का निराकरण हम अहिंसा सिद्धान्त के द्वारा कर सकते हैं और विश्व में शांति अवश्य स्थापित हो सकती है। श्री मुनि फूलचन्द्र जी ने बताया कि हमने यदि अहिंसा पर गंभीरता पूर्वक विचार कर लिया तो विश्व में शान्ति अवश्य स्थापित हो सकती है। अन्त में डा० कालीदास

[शेष टाइटिल-पृष्ठ ३ पर]

[पृष्ठ १४६ का शेष]

नाग ने अपनी ओजस्विनी भाषा में बताया कि हमें कुछ करना है, तो इस संकुचित दायरे में नहीं, अपितु सारे विश्व में महावीर के सिद्धान्तों का डंका बजा देना है। ये वे ही सिद्धान्त हैं जिनसे शान्ति मिल सकती है। जैन साहित्य शांति रूपी खजाने से लबालब भरा हुआ है, आवश्यकता है इसके सदुपयोग की। आपने भाषण के अन्त में नालंदा विश्वविद्यालय का जिक्र करते हुए कहा कि उसमें विभिन्न देशों से आये हुए दश हजार विद्यार्थी विद्याध्ययन करते थे और उन्हें सर्व प्रकार की सुविधायें मुफ्त दी जाती थीं। आज ऐसा ही एक अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा विश्वविद्यालय बनना चाहिए जिससे कि संसारको शांतिका मार्ग प्राप्त हो सके।

आज के ही अपराह्न में ३॥ बजे से सा० हाउस के प्राङ्गण में खुला अधिवेशन हुआ। जिसमें डा० हीरालाल जी ने 'अहिंसा और अपरिग्रह' पर हुई चर्चा का, श्री सुमेरुचन्द्र जी दिवाकर ने 'अनेकान्त और स्याद्वाद' पर हुई चर्चा का और डा० हरिमोहन भट्टाचार्य ने 'विश्व शांति के उपाय पर हुई चर्चा का सार-अंश पेश किया। अन्त में अध्यक्ष पदसे भाषण देते हुये साहू शांतिप्रसाद जी ने कहा कि दूसरे देशोंके लोगोंको जैनधर्मके सिद्धांतोंसे पूर्णतः परिचित करना चाहिए और इसके लिए यह आवश्यक है कि जैनधर्मके मुख्य उपदेशोंको विभिन्न भाषाओंमें प्रकाशित किया जाय।

अन्तमें अध्यक्षपदसे एक शांति प्रस्ताव उपस्थित किया गया, जो सर्वसम्मतिसे पास हुआ।

सेमिनार के लिए आये हुए लेखों में से कुछ लेख इसी किरण में प्रकाशित हैं। शेष लेख यथासम्भव आगेकी किरणोंमें दिये जावेंगे।

—हीरालाल सिद्धान्तशास्त्री